का फल था। सामग्री को संकलित किया गया। विखरे प्रमाणों को इकट्ठा करना जहां कठिन कार्य था, वहां यह इतिहासकारों के समक्ष हर समय उतरदायित्व भरा कार्य था। पर गुरूणी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के आशीवाद से यह कार्य संपन्न हुआ। इस में दो ग्रंथ, पट्टावली पराग, पट्टावली संग्रह वहुत काम आए। आनंद जी कल्याण जी पेढ़ी से हमें मुगल वादशाहों के वह हुकमनामें मिले, जो जैन तीर्थ की रक्षा का शिकार रोकने हेतू जारी किए गए थे। इन में पंजाव में हिंसा वंद करने का उल्लेख था।

इस ग्रंथ के प्रारम्भ में जैन धर्म की प्राचीनता का वर्णन किया गया है। फिर जैन तीर्थंकर और पंजाव का वर्णन जैन आगमों के आधार पर किया गया है। जैन राजाओं द्वारा पंजाव में धर्म प्रचार का वर्णन किया गया है। इन राजाओं में मोर्य, कुषाण, शक, वंश प्रमुख रहे हैं। भगवान ऋषभदेव के पुत्रों में वाहुवलि की राजधानी गंधार देश की तक्षशिला थी। यहां भरत-वाहुवलि संग्राम हुआ था। इसी धरती पर वाहुवलि ने राजपाट छोड़ कर दीक्षा ग्रहण की थी। यहां उन्हें केवल ज्ञान प्राप्त हुआ।

भगवान ऋषभदेव धर्म प्रचार हेतु यहां पधारे थे। उन्हें तपस्या के समय एक वर्ष तक भोजन नहीं मिला। हस्तिनापूर में उनके पौत्र श्रेयांस ने उन्हें आहार (भोजन) दिया। फिर शांति, कुंथु अरह प्रभु जैसे चक्रव्रती तीर्थंकर इस धरती ने पैदा किए। रामायण में ऋषि वालमीकी का आश्रम पंजाव में है।

भगवान महावीर केवल ज्ञान के समय वर्तमान स्थानेश्वर (कुरूक्षेत्र) में पधारे थे। एक वार उन्होंने सिन्धु सोविर देश के राजा दुंदयन को दीक्षा देने उन्होंने लम्वा उग्र विहार किया था।

साहित्य जगत की इस कृति की प्रस्तावना प्रसिद्ध सिक्ख इतिहासकार स्वः शमशेर सिंह अशोक ने लिखी थी। यह उनकी अंतिम प्रस्तावना थी। मेरा धर्मभ्राता रविन्द्र जैन उनके गांव में सरकारी नौकरी करता था। श्री अशोक अंतंराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त इतिहासकार थे। सब से बडी बात है कि उनका जैन धर्म के प्रसिद्ध आचार्य आत्मा राम जी महाराज से घनिष्ठ संबंध था। वह उनकी विद्वता से बहुत प्रभावित थे। जैन मुनियों के तप त्याग का हृदय से सन्मान करते थे। उनकी विशाल लाईब्रेरी में हजारों पुस्तकें थी। जो उन्होंने अपने जीवन काल में ही पंजाबी विश्वविद्यालय को भेंट कर दी थी। वह पंजाब इतिहास के प्रतिष्ठत विद्वान थे। जब हमारे द्वारा इस पुस्तक की रूप रेखा दिखाई गई तो उन्होंने हमारी लिखत बात को अक्षरतः सत्य माना। उनका मानना था कि ब्राह्मणवाद के कारण जैन धर्म का विलय हिन्दु धर्म में होता रहा है। जैन धर्म की ही नहीं, हर धर्म पर ब्राह्मणों ने अपना प्रभाव छोडा है। आज सिक्ख धर्म भी ब्राह्मणों की परम्परा से बंधा है। जिन के लिए गुरू साहिबान सिक्खों को वर्जित किया था। धर्म के बारे उनके विचार स्पष्ट थे "धर्म में नैतिक, सदाचार, सभ्यता, दर्शन व इतिहास सब आ जाता है। धर्म इन मूल भूत तत्वों के मिश्रण का नाम है।" फिर ग्रंथ का प्रकाशन श्री आत्म जैन प्रिंटिंग प्रैस लुधियाना से प्रकाशित हुआ।

इस प्रकार यह ग्रंथ भी हमने तैयार कर अपनी गुरूणी साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज के कर कमलों में समर्पित किया। हम इस ग्रंथ की एक प्रति लेकर भाषा विभाग में पहुंचे, जहां हमारी भेंट वर्तमान निर्देशक डा. श्री मदनलाल हरीजा से हुई। उन्होंने हमें जैन धर्म की कुछ ऐंटरी पंजाबी कोष में लिखवाने के लिए बुलाया था। ग्रंथ देख कर उन्होंने

कहा "आप का श्रम इस योग्य है कि इस ग्रंथ का विमोचन भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी करें। आप कहो तो मैं अपने साथी श्री ओ.पी. आनंद दिल्ली से मिलवाता हूं। वह आपको राष्ट्रपति भवन ले चलेंगे।"

इस तरह यह ग्रंथ लम्बे परिश्रम के वाद राष्ट्रपति भवन में श्री ओ. पी. आनंद द्वारा पहुंचा। यह भेंट एक यादगार भेंट थी। फिर राष्ट्रपति जी से समय लेने का कार्यक्रम चला। सौभाग्य से आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज दिल्ली में विराजमान थे। मेरे धर्मभ्राता रविन्द्र जैन ने श्री गुरचरण सिंह ढिल्लों तत्कालीन सचिव राष्ट्रपति भवन से अच्छा संपर्क वना लिया।

वड़े लम्वे अंतराल के वाद २६ फरवरी १९८७ को इस ग्रंथ का विमोचन भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी ने राष्ट्रपति भवन में एक सादे समारोह में किया। इस अवसर पर हम दोनों को 'श्रमणोपासक' पद से विभूषित किया गया। साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज को ज्ञानी जी ने 'जैनज्योति' पद से विभूषित किया। इस ग्रंथ के विमोचन का समाचार सारे समाचार पत्रों में आया। दूरदर्शन जालंधर ने वजट की खवर रोक कर इस समाचार को प्रसारित किया। यह समारोह आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज के नेश्राय में सम्पन्न हुआ। इस में साध्वी आचार्य डा० साधना जी महाराज अपने शिष्य मण्डली सहित पधारी थी। ५० के करीव मेहमान पधारे। इन में कुछ आचार्य श्री के विदेशी शिष्य थे।

इस समारोह को सफल करने में मेरे धर्मभ्राता रविन्द्र जैन जी ने श्रम किया। यह मेरा सौभाग्य था कि मुझे व मेरे धर्म भ्राता को पहली वार राष्ट्रपति भवन में सन्मानित किया गया। इस अवसर पर एक पुस्तक श्रमणोपासक

पुरूषोत्तम जैन का विमोचन और हुआ, यह पुस्तक मेरे धर्मभ्राता रविन्द्र जैन ने राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखी थी। इस पुस्तक का विमोचन भी मेरे धर्मभ्राता ने ज्ञानी जी से करवाया। वह पुस्तक राष्ट्रपति भवन में मुझे भेंट की गई। यह किसी राष्ट्रपति द्वारा जैन साधु, साध्वी, व लेखकों का प्रथम अभिनन्दन था। जो हमारे जीवन की महत्वपूर्ण अनुभूति है। इस विमोचन से हमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जैन इतिहासकार के रूप में मान्यता मिली। मेरे धर्मभ्राता ने इसी दिन मेरा ४०वां जन्मदिन राष्ट्रपति भवन में मनाया।

लघु पुस्तिकाएं

पुरूषोत्तम प्रज्ञा १ :

यह प्रथम जैन विज्ञप्ति है जो ३१ मार्च और १० नवंबर को पंजाबी भाषा में प्रकाशित होती है। इस में शोध निबंध भी प्रकाशित होते हैं।

आचार्य श्री तुलसी जी २ :

इस कृति की रचना आचार्य श्री तुलसी के पंजाब पधारने पर हुई थी। उनके जीवन, कृत, व महानता पर पंजाबी भाषा में यह लघु पुस्तिका है। आचार्य श्री जैन समाज के महान कवि, लेखक व वक्ता हुए हैं। आप का परिचय पीछे किया जा चुका है।

आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज ३ :

दिगम्बर आचार्य श्री देशभूषण के जीवन, कृतित्व पर प्रकाश डालने वाली हमारी यह लघु कृति है। आचार्य श्री सैंकड़ों ग्रंथों के रचयिता हैं।

माता ज्ञानमति जी ४ :

माता ज्ञानमति अभिनंदन ग्रंथ में हमारा पंजावी भाषा में उनके जीवन से संवंधित लेख प्रकाशित हुआ था। जिसमें उनके उनका जीवनी व कृतियों का वर्णन है। साथ में उन्होंने जिन तीर्थों का जीर्णोद्धार किया अथवा नए तीर्थों का निर्माण किया है, उसका विवेचन किया गया है।

उपप्रवर्तनी श्री स्वर्णकांता जी महाराज ५ :

गुरूणी जी के पंजावी विश्वविद्यालय पधारने पर उनके जीवन व व्यक्तित्व पर पंजावी में एक परिचय पुस्तक लिखी थी, जो लोगों में वांटी गई थी।

आचार्य श्री आत्मा राम जी महाराज ६ :

आचार्य श्री आत्मा राम जी महाराज भाषण माला के अंतरगत उनका परिचय हमारे द्वारा पंजावी में प्रकाशित हुआ था, जो गुरूणी जी के पंजावी विश्वविद्यालय पधारने पर वांटा गया था। यह पुस्तिका भाषण में आए श्रोताओं में वांटी गई।

उर्तारध लोंका गच्छ की जैन साध्वीयां ७ :

जैन धर्म में ८४ गच्छ श्वेताम्वर समाज के माने जाते हे। इनमें एक क्रान्तिकारी गच्छ का नाम लोंकाशाह द्वारा गठित लोकगच्छ है। इस की उत्पति गुजरात में मानी जाती है। इस गच्छ की कई शाखाएं हैं। जिस गच्छ ने पंजाव में जैन धर्म का प्रचार किया, उस का नाम उर्तारथ लोंकागच्छ है।

इस लोंकागच्छ की साध्वीयों की प्राचीन परम्परा का उल्लेख इस पुस्तक के माध्यम से करने की चेष्टा की गई है। जैन साध्वी परम्परा भगवान ऋषभ देव से भगवान महावीर तक चली। प्रभु महावीर के निर्वाण के वाद साध्वी परम्परा का व्यवस्थित ढंग से इतिहास नहीं मिलता। फिर भी

ब्राह्मी, सुन्दरी, चन्दना आदि १६ साध्वीयां जैन धर्म में पूज्य हैं। स्थूलिभद्र की सात वहिनों का जैन इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान हैं। याकिनी महत्तरा, जैसी साध्वी भी हुई, जिस ने आचार्य हरिभद्र को धर्म पर आरूढ़ करा, प्रायश्चित रूप में १४४४ ग्रंथों की रचना करवाई। खरतर गच्छ की कई साध्वीयों का वर्णन पंजावी साध्वी परम्परा में मिलता है।

पंजाव के इतिहास में साध्वी ज्ञाना जी सुनाम की साध्वी थीं। आप के समय कोई भी साधु ना रहा। साध्वी श्री को इस वात की चिंता सताने लगी। उन्होंने अपने भानजे को वैरागी वना कर पढ़ाना शुरू किया। वाद में उन्हें जैन साधु दीक्षा प्रदान की। फिर शास्त्रों का स्वाध्याय करवाया। वह संत इतने प्रसिद्ध हुए कि श्री संघ ने उन्हें आचार्य पद से विभूषित किया। साध्वी ज्ञाना जी की परम्परा में कई साध्वीयों की शाखा निकली। सव पंजाव में धर्म प्रचार करने वाली साध्वीयां थीं।

जैन धर्म में स्त्री का स्थान वहुत महत्वपूर्ण है। जैन धर्म में एक स्त्री तीर्थंकर भगवती मल्ली जी हुई। जिन्होंने अनेकों राजाओं को प्रतिवोध देकर जैन धर्म में दीक्षित किया। राजुल जैसी साध्वी ने रथनेमि मुनि को धर्म से भ्रष्ट मोक्ष मुनि मार्ग पर पुनः आरूढ़ किया। भगवान महावीर के शाषण में अनेकों साध्वीयां हुई हैं जिनका अपना इतिहास है। आज भी जैन साध्वीयों ने साहित्य, धर्म, कला, शिक्षा, संस्कृति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान डाला है।

स्वप्नों पर आधारित जैन मंदिर ६ :

विश्व की प्रसिद्ध पंजावी लेखिका श्रीमती अमृता प्रीतम जी व्योवृद्ध होते हुए भी, हमेशा विचार से तरूण हैं। वह हर भाषा के लेखक को मिलती हैं, प्रेरणा देती हें। ऐसी घटना हमारे साथ भी घटी। जव अमृता जी की पुस्तक 'लाल

धागे का रिश्ता' प्रकाशित हुई तो इस पुस्तक की हिन्दी अनुवाद की एक प्रति हमें भेंट की गई। यह पुस्तक श्रीमती अमृता प्रीतम जी की विश्व साहित्य को महत्वपूर्ण देन है। उनकी पुस्तक में स्वपनों पर आधारित इस पुस्तक में अमृता जी द्वारा देखे कुछ स्वप्न दर्ज हैं। जब वह यह पुस्तक भेंट कर रहीं थीं तो उन्होंने हमें कहा "आप स्वप्नों पर आधारित मन्दिरों के बारें में पंजाबी में लिखें। मैं इसे अपनी अपनी पत्रिका नागमणि में स्थान दूंगी।" ऐसी महान कवियत्री व कहानीकार लेखिका की बात सुन कर मेरे धर्मभ्राता रविन्द्र जैन ने उत्तर दिया "हम सभी मंदिरों के बारे में लिख नहीं सकते। हां अगर आप चाहें तो स्वप्नों पर आधारित हजारों जैन मन्दिर हैं जिनके बारे में हम सूचना दे सकते हैं।

श्रीमती अमृता प्रीतम जी ने मेरे धर्मभ्राता रविन्द्र जैन की बात स्वीकार की। इस प्रकार हमने स्वप्नों पर आधारित जैन मन्दिरों की सूची तैयार की। हमने इस संदर्भ में ४ किश्तों में नागमणि जैसी प्रसिद्ध पंजाबी पत्रिका में प्रकाशित हुए हैं। यह हमारे लिए ऐसा अनुभव था कि जैन मन्दिरों की सूची तैयार करने, हमें काफी जैन तीर्थों ग्रंथों का अध्ययन करना पड़ा। जिन में प्रमुख ग्रंथ थे 'अखिल भारतीय दिगम्बर जैन तीर्थ' व 'जैन तीर्थ क्षेत्र दर्शन' प्रमुख हैं। पहले ग्रंथ के ७ भाग हैं। दूसरे के ३ भाग हैं। इन्हीं ग्रंथों के आधार पर हम यह ग्रंथ संपन्न कर पाये।

इन रचनाओं के माध्यम से पंजाबी लेखकों में हमारी पहचान और बढ़ी। हमें साहित्य क्षेत्र में अपनी मातृ भाषा व संस्कृति के प्रति कुछ करने की प्रेरणा मिली। हम भी नागमणि परिवार के सदस्य बन गए। श्रीमती अमृता प्रीतम जी से पुस्तकों की भेंट का सिलसिला १९७६ से चल रहा है जो आज भी चालू है। ये पुस्तकें हमारी पहचान कराती हैं।

अनमोल वचन १० :

हमारी गुरूणी, जिनशाषण प्रभाविका, जैन ज्योति साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज खाली प्रवचन कर या पंजावी जैन साहित्य की प्रेरिका ही नहीं, वल्कि स्वयं संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी व पंजावी की लेखिका थी। उन्होंने हिन्दी भाषा में जैन धर्म के प्राचीन काव्यों का संकलन किया। प्राचीन जैन हस्तलिखित भण्डारों की सूची तैयार की थी। अम्वाला में अनेकों आचार्य, मुनियों व साध्वी को उन्होंने सन्मान करने का सौभाग्य मिला। उनकी साहित्य जगत की सेवा भी कम नहीं। पर पंजावी भाषा में उनकी एक कृति 'अनमोल वचन' मानव मात्र को जीने की कला सिखाती है। वह प्राचीन लिपि पढ़ने में सक्षम थे। उनकी लेखनी सदैव चलती रहीं। इस पुस्तक की कापीयां उन्होंने हमें गिदडवाहा चतुर्मास में प्रदान की करते हुए कहा था "हमारी छोटी सी पंजावी किताव को देखो। अगर प्रकाशन के योग्य हो तो प्रकाशित करवा दो।"

हम ने इस की कापीयां देखी। अनुवाद की भाषा के कुछ सम्पादन की कमी थी। हम दोनों ने सारी कापीयों को पढ़ा। इस में योग्य संशोधन किए। सव से वडी वात इस ग्रंथ का सम्पादन था जिन्हें हमने मात्र १८ दिनों में करके, पुस्तक, प्रकाशन करने हेतु श्री आत्म जैन प्रिंटिंग लुधियाना को भेज दी। इस पाकेट वुक का टाइंटल आर्कषक है। महाराज श्री उन दिनों उप-प्रवर्तक श्री चन्दन मुनि जी महाराज से जैन शास्त्र व जैन ज्योतिष का स्वाध्याय कर रही थी। इतनी व्यवस्था में उन्होंने जैन ग्रंथों से सुन्दर सुक्त निकाल कर इस पुस्तक को तैयार किया था। इस पुस्तक की विशेषता है कि इसे कहीं से पढो, नए विचार प्राप्त होते हैं। यह पुस्तक हमेशा नई रहती है। कहीं से भी पढ़ो हर पृष्ट

प्रेरणा देने वाला व जीवन में क्रान्ति उत्पन्न करने वाला है। इस ग्रंथ का विमोचन पंजाबी विश्वविद्यालय में उप-कुलपति ने किया था। यह ग्रंथ जन साधारण में खूब बांटा गया। नैतिक ग्रंथ होने के कारण यह अद्भुत शिक्षा से भरा था। यह हमारे पंजाबी साहित्य की कथा है। हम अगले अध्ययन में हिन्दी साहित्य की चर्चा होगी। मैंने इस प्रकाय में हम दोनों द्वारा रचित, अनुवादित, व साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज द्वारा संपादित साहित्य का विशलेषण किया है। मैंने स्थान स्थान पर हर पुस्तक के पीछे छिपे उद्देश्य का उल्लेख किया। वहां इन पुस्तकों को लिखने में आई रूकावटों का वर्णन किया है। इन पुस्तकों के प्ररिका व विमोचन कर्ता का उल्लेख किया है। कई पुस्तकों की समिक्षा दैनिक अजीत, दैनिक ट्रिव्यून, जैन एंटीकटी, जैन जनरल, अमर भारती व गुणस्थल में विस्तृत रूप से प्रकाशित हो चुकी है। पुरातन पंजाब विच जैन धर्म व भगवान महावीर ग्रंथ की समीक्षा को पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला के धर्म अध्ययन की पत्रिका में अंग्रेजी भाषा में विस्तृत रूप से प्रकाशित हुई। इसी तरह उपासक दशांत सूत्र की समीक्षा जैन ऐंटीकयुटी जैन जनरल व पंजाब सौरभ में विस्तृत रूप से प्रकाशित हुई। हमारे प्रसिद्ध समिक्षाकारों में डा० धर्म पाल सिंघल, डा० धर्म सिंह, डा० गणेश ललवाणी, प्रसिद्ध नावलकार श्री ओम प्रकाश गासो, डा० वजीर सिंह, डा० जगतार के नाम उल्लेखनीय हैं। श्री सूत्रकृतांग सूत्र के कुछ अंश श्रीमती अमृता प्रीतम जी ने नागमणि के लिए संकलन कर प्रकाशित किए। श्री सूत्रकृतांग सूत्र की समीक्षा दैनिक पंजाबी ट्रिव्यून व यूनिवर्सिटी की पत्रिका में प्रकाशित हुई

हमें सम्मेलनों के माध्यम से जैन पंजाबी साहित्य संसार के कोने कोने तक पहुंचाने का सौभाग्य मिला है।

हमारा काम विद्वानों जैसा नहीं, हमारा प्रयास तो पंजाबी पाठकों तक जैन धर्म, दर्शन, इतिहास की परम्परा को पहुंचाना था, जो जन साधारण पंजाबी भाषा के अभाव से नहीं जानते थे। मुझे प्रसन्नता है कि हमें इस कार्य में काफी सफलता मिली है। जैन समाज साहित्य के क्षेत्र में हमेशा आगे रहा है। हर युग में हर भाषा में जैन आचार्यों व विद्वानों ने साहित्य लिखा। जैन साहित्य के मामले में पंजाबी भाषा २४०० वर्षों तक अछूती रही। इस कमी को पूरा करने का सौभाग्य हमें मिला। हमें समस्त जैन समाज के प्रबुद्ध वर्ग ने इस कार्य में सहयोग दिया। यह कार्य तीर्थंकर परम्परा के अनूकूल है क्योंकि तीर्थंकर अपना धर्म उपदेश लोक भाषा में करते हैं। अगले अध्ययन में हमारे द्वारा हिन्दी भाषा में जो साहित्य लिख गया है, उसका वर्णन करूंगा।

हमारा हिन्दी साहित्य

भारत जनसंख्या की दृष्टि से विश्व का दूसरा देश है जिस में विभिन्न भाषाएं धर्म, संस्कृतियां व विचारधाराएं फली फूली हैं। इन भाषाओं में प्रमुख भाषा हिन्दी है जो हमारे देश की राष्ट्र भाषा है। अंग्रेजी के बाद इस का स्थान है। हिन्दी भाषा की उत्पति में जैन आचार्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जैन आचार्यों ने प्राकृत भाषा में साहित्य रचा है, इसी प्राकृत भाषा से अपभ्रंश के रूप में लोक भाषा की उत्पति हुई। इस भाषा में जैन आचार्यों का अधिपत्य रहा है। इसी भाषा में जब सुधार आया तो हिन्दी के रूप में आया। हिन्दी में प्रथम जीवन चारित्र जैन कवि पं० बनारसी दास ने अर्ध कथानक के रूप में ३५० वर्ष पहले लिखा। हिन्दी भाषा में कबीर, सूरदास, रहीम व तुलसी कवि हुए। पर हिन्दी भाषा का प्रथम काव्य पृथ्वी राज रासो है। अमीर खुसरो ने हिन्दी भाषा को विकसित करने में अभूतपूर्व योगदान दिया है।

जैन आचार्यों ने हजारों की संख्या में हिन्दी भाषा को ग्रंथ भेंट किए हैं। कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द जी महाराज के समय हिन्दी भाषा ही उत्पति हो चुकी थी। इस का विकसित रूप मुस्लिम युग में आया। इसी समय उर्दू भाषा की उत्पति भारत में हुई। यह विदेशीयों के लिए संपर्क भाषा थी। स्वतन्त्रता से पहले हिन्दी अपनी जडें जमा चुकी थी। जैन मुनियों के वोलचाल, प्रवचन व जन संपर्क की भाषा भी यही रही है। इस भाषा के साहित्य में जैन विद्वानों को योगदान काफी महत्वपूर्ण रहा है।

इसी परम्परा को आगे बढाने के लिए और जैन समाज को अपने साहित्य से परिचित कराने के लिए हमें

हिन्दी भाषा को चुनना पडा। इस का कारण हिन्दी का अन्तर्राष्ट्रीय होना भी है। दूसरा कारण अधिकांश मुनियों व श्रावकों का पंजावी भाषा से अपिरचित होना भी है। इसी कमी को दूर करने के लिए हमारे द्वारा हिन्दी भाषा में साहित्य की रचना की गई। जिस का उल्लेख आगे किया जाएगा।

१. श्रमणोपासक पुरूषोत्तम :

इस पुस्तक की रचना मेरे धर्म भ्राता रविन्द जैन ने की हद जो मेरे कर कार्य में सहायक रहा है। प्रस्तुत पुस्तक का वर्णन पीछे राष्ट्रपति भवन के समारोह उल्लेख में किया गया है। यह पुस्तक मेरे शिष्य धर्म भ्राता रविन्द्र जैन ने मेरे ४०वे जन्म दिन पर हिन्दी में लिखी थी। मैं स्वयं को इस योग्य नही समझता, जिस तरह से उस ने मुझे प्रस्तुत किया है। मेरा शिष्य ३१ मार्च १९६९ से मेरे को समर्पित जीवन जी रहा है। वह मुझे अपना गुरू मानता है। यह पुस्तक काफी महत्वपूर्ण है। इस के शुरू में जैन श्रावक जीवन का वर्णन है, श्रावक के १२ व्रतों का वर्णन है। श्रावक कैसा होना चाहिए, इस का वर्णन किया गया है। दूसरे भाग में प्रसिद्ध जैन इतिहास के श्रावक-श्राविका के जीवन चारित्र का वर्णन किया गया है। तीसरे भाग में मेरी प्रशंसा जरूरत से ज्यादा की गई है। पर यह पुस्तक श्रद्धा समर्पण की गाथा है। विनयवान शिष्य का स्वरूप कैसा होता है ? कैसे ज्ञान पाकर, ज्ञानी अहं से दूर रहता है ? इस पुस्तक को पढ़ने से हमारे रिश्तों का आत्मिक आभास होता है। यह रिश्ता किसी पूर्व भव के कर्म के कारण घटित हुआ है। मेरा शिष्य ने स्वार्थ रहित जीवन जीया है। यह पुस्तक मूझे भेंट करने के लिए उस ने भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी को चुना। मेरे जीवन का यह अभूतपूर्व दिवस था, जव भारत के

गणतंत्र के राष्ट्रपति ने मेरे धर्म भ्राता की पुस्तक श्रमणोपासक का विमोचन किया। ज्ञानी जी ने इसी महान पद से मुझे सन्मानित किया। आज इस पुस्तक का हर अक्षर मेरे लिए प्रेरणा है। इस पुस्तक में जितना मुझे महान प्रकट किया गया है, उतना मैं महान नहीं। मैं तो तीर्थंकर व श्रमण परम्परा के मार्ग पर चलने वाला साधारण आदमी हूं। यह पुस्तक एक ऐसी दस्तावेज है जो गुरू शिष्य के रिश्ते की व्याख्या करती है। यह पुस्तक मेरे जीवन की अमूल्य निधि है। मेरे धर्म भ्राता रविन्द्र जैन की मेरे प्रति समर्पित जीवन की इतिहासिक धरोहर है। इस पुस्तक का मूल्यांकन करना, श्रद्धा का मूल्यांकन करना है जो असंभव है। इस समारोह पर आचार्य श्री सुशील कुमार जी महाराज ने हमें आशीवाद दिया। इस पुस्तक के विमोचन समारोह पर साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज का चित्र मैंने व उनके भ्राता श्री सुरिन्द्र जैन ने राष्ट्रपति को भेंट किया।

२. जैन जगत की ज्योतिर्मय श्रमणियां :

जैन तीर्थंकरों ने स्त्रियों को पुरूष के समान समाजिक व धार्मिक समानता प्रदान की है। इसका प्रमाण है, जैन जगत में श्रमणी परम्परा। जैन जगत के २४ तीर्थंकरों के काल में श्रमणी वर्ग की संख्या पुरूषों से अधिक रही है। श्रमणी परम्परा आधुनिक काल में भी अपना गौरवमय इतिहास को जीवत रखे हुए है। आज भी जैनों के सभी सम्प्रदायों मे साध्वीयों की गिनती, साधुओं से ज्यादा मिलती है। हमारी इस लघु पुस्तिका में कुछ प्राचीन इतिहासक साध्वीयों का जीवन सरल भाषा में वर्णन किया है। प्रभु ऋषभ देव से प्रभु महावीर तक की प्रसिद्ध साध्वीयों के साथ साथ प्रभु महावीर के निर्वाण से आज तक हुई कुछ इतिहासक साध्वीयों का वर्णन किया गया है। जिनका

संबंध पंजाब से किसी न किसी तरह रहा है। चाहे उनका जन्म पंजाब में हुआ हो, चाहे उनके धर्म प्रचार का क्षेत्र पंजाब हो। जैन समाज की विडम्बना रही है कि साध्वी परम्परा अधिक होते हुए भी साध्वीयों की कोई पट्टावली प्राप्त नहीं होती। इस का कारण य ह रहा कि पट्टावली हमेशा आचार्यो की होती है। आचार्य पुरूष चुना जाता है, चाहे यह जैन सिद्धांत नहीं पर परम्परा है। श्वेताम्बर जैन परम्परा में तो स्त्री तीर्थंकर बन सकती है। १९वीं तीर्थंकर भगवती मल्लीनाथ का इतिहासक वर्णन ज्ञाता धर्म कथांग सूत्र में मिलता है। इस पुस्तक में हम कम साध्वीयों का वर्णन कर पाए हैं। इस का कारण साध्वीयं स्वयं भी हैं तीर्थंकर परम्परा ने उन्हें बराबर स्थान दिया। पर श्रद्धा व संकोच वश उन्होंने अपना इतिहास सुरक्षित नही रखा। साध्वीयों के नाम हस्तलिखितों में आये हैं। अपने सुन्दर लेखन के कारण साध्वीयां शास्त्रों की प्रतिलिपियां करती थी पर साध्वीयों ने अकेली प्रतिलिपियां ही नहीं करती थीं, उन्होंने जैन इतिहास में कई नए प्रकारण जोड़े हैं। कई आचार्यो को पढ़ाने का श्रेय उन्हें प्राप्त हैं कई साध्वीयां अच्छी लेखिका, शास्त्रार्थ करने वाली व कवियित्री भी हुई हैं उन साध्वी ने कई बार जैन धर्म की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। प्रस्तुत पुस्तक अपने में महत्वपूर्ण है। विद्वानों ने इस की प्रशंसा की है। यह इतिहास की पुस्तक है। नई-पुरानी साध्वी परम्परा का संगम है।

महाश्रमणी ३ :

यह हमारी तृतीय हिन्दी रचना है। इस रचना का प्रकाशन पंजाबी जैन साहित्य की प्रेरका जिन शासन प्रभाविका, जैन ज्योति श्री स्वर्णकांता जी महाराज के ४०वें

दीक्षा महोत्सव पर प्रकाशित की गई। इस पुस्तक को लिख कर, हमने महासाध्वी श्री के व्यक्तित्व व कृतित्व का उल्लेख किया है। हमें इस ग्रंथ की तैयारी में भी काफी श्रम करना पडा। महासाध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज अपने वारे में स्वयं कुछ नहीं वताती थी। उनके शिष्य परिवार से, जो हमें अवगत हुआ वह अपर्याप्त था। इंटरनैशनल पावर्ती जैन अवार्ड देने की घोषणा श्रीमती कैयूंया को हुई थी। उस संवंध में एक समारोह का आयोजन उपप्रवर्तनी डा० (साध्वी) श्री सरिता जी महाराज ने दिल्ली वाराह टुटी जैन स्थानक में रखा था। हम एक दिन पहले आयोजन हेतु दिल्ली पहुंचे थे। हम वीर नगर जैन कालोनी में महाराज श्री के वडे संसारिक भ्राता स्व० श्री जगदीश चन्द्र जी जैन के यहां ठहरे थे। उन्हें अपनी पुस्तक और सामग्री की समस्या के वारे में वताया। उन्होंने हमें महाराज श्री के वारे में वहुत महत्वपूर्ण जानकारी दी। उन्होंने महाराज श्री के वचपन, महाराज श्री के माता पिता, महाराज श्री की घर से प्रवज्या हेतु पालिताना पलायन करना, पाकिस्तान वनना, और उनके साध्वी वनने तक का विवरण वता दिया। उनके साध्वी जीवन के वारे में महत्वपूर्ण जानकारी हमें साध्वी श्री की शिष्य सरलात्मा, साध्वी श्री राजकुमारी जी महाराज से प्राप्त हुई। साध्वी श्री राजकुमारी जी महाराज उनकी प्रथम शिष्या थीं। महाराज श्री की गुरूणी परम्परा के वारे में हमें अन्य साध्वीयों ने वताया। महासाध्वी में यह गुण था कि वह लोकएषणा से दूर रहती थी। उन्हें पद की भूख नहीं थी। साहित्य में वह अपना चित्र तक प्रकाशित करने को मना करती थी। एक दिन मैंने महाराज के नाम के साथ उनका पद उपप्रवर्तनी लिख दिया। उन्होंने कहा "आप हमें पदों में मत उलझाओ, हमने घर साधना के लिए छोड़ा है। मेरा पद साध्वी है जो प्रभु महावीर की

परम्परा ने मुझे प्रदान किया है। मुझे तो परम समाधि को पाना है। ज्ञान-दर्शन चारित्र तप की अराधना में डूबे रहने के ईलावा मुझे संसार से कुछ लेना नहीं। आप वार वार पुस्तकों में मेरा उल्लेख क्यों करते हो ? उल्लेख तो महान आत्माओं का होना चाहिए, जो संयम, तप, ज्ञान में मेरे से महान हैं।''

परन्तु हमारा फैसला था कि महाराज श्री का एक प्रमाणिक जीवन चरित्र हिन्दी में लिखना है। हम ने साधु साध्वीयों की सहायता से ग्रंथ का लेखन कार्य शुरू किया। हमें प्रसन्नता है कि इस ग्रंथ की भूमिका भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी ने स्वयं लिखी थी, जिसमें उन्होंने प्राचीन जैन परम्परा में भगवान महावीर के योगदान प्राचीन जैन साध्वीयां, हमारे चारित्र नायिका द्वारा किए पंजावी जैन साहित्य के कार्य का उल्लेख किया था। इस भूमिका के लिए मेरे धर्म भ्राता रविन्द्र जैन ने वहुत प्रयत्न किया। क्योंकि राष्ट्रपति भवन में किसी पुस्तक के लिए दो शव्द लिखने के लिए पुस्तक को लम्वी वैधानिक प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। इस प्रक्रिया में ज्ञानी जी के सचिव श्री गुरचरण सिंह पंछी का अच्छा मैत्रीपूर्ण सहयोग रहा।

यह पुस्तक प्रकाशित हुई। इस का विमोचन अम्वाला शहर में सम्पन्न हुआ। इस समारोह में स्व. प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्म चन्द्र जी महाराज अपने शिष्य उपप्रवर्तक श्री अमर मुनि जी के साथ विराजमान थे। इस पुस्तक का विमोचन श्री आत्मा राम जैन एडवोकेट हनुमानगढ़ ने किया। यह पुस्तक का प्रकाशन मेरे धर्मभ्राता रविन्द्र जैन ने जालंधर से करवाया। इस का प्रमुख कारण पुस्तक को शीघ्र प्रकाशित करना था। क्योंकि दीक्षा जयंती दिन करीव आ रहा था। लुधियाना की आत्म जैन प्रिंटिंग प्रैस से यह कार्य

समय पर होना असंभव था। यह हमारे लिए परम-सुखद अनुभव था। इस माध्यम से हम अपनी गुरूणी का पहला परिचय उन्हें समर्पित कर सके।

इस अवसर पर ज्ञानी जी द्वारा प्रदत चादर भी वैंड-वाजे सहित श्री संघ लेकर आया। जिसे श्री संघ की साक्षी से पहले उन्हें समर्पित किया गया। फिर वहां विराजित सभी साधु साध्वीयों ने चादर को स्पर्श कर जैन ज्योति पद को अनुमोदित किया। इस तरह इस पुस्तक का, समारोह रंगारंग रहा। हमारा सन्मान भी श्री संघ अम्वाला ने किया। इस अवसर पर पंजावी विश्वविद्यालय के धर्म अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डा० एच०एस. कोहली सपरिवार पधारे। श्री संघ ने उनका व हमारा शाल द्वारा सन्मान किया। इस अवसर पर साध्वी श्री ने हमारे कार्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने सारा श्रेय हमें दिया। हालांकि उनके आशीवाद के विना सव असंभव था।

प्राचीन काल में जैन धर्म ४ :

प्राचीनकाल से पंजाव के विभिन्न भागों में जैन धर्म का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। इस स्थान का पंजाव का इतिहास लिखने वालों ने कभी ध्यान नहीं दिया। हमारी एक पुस्तक पुरातन पंजाब विच जैन धर्म लिखने के वाद इस का महत्व वहुत वढ गया है। क्योंकि यह पुस्तक पंजावी भाषा में थी हिन्दी भाषा के जानकार हमारे दृष्टिकोण से अनिभिज्ञ रहते थे। इस कमी को पूरा करने के लिए एक शोध निंवंध इस विषय पर लिखा। इस प्रकाशन जैन धर्म की शोध पत्रिका 'अर्हत वचन' में हुआ। जिसे कुन्दकुद जैन ज्ञानपीठ इन्दोर प्रकाशित करती है। इस त्रैमासिक पत्रिका के सम्पादक डा० अनुपम जैन हैं। यह १२ पृष्ठ का निवंध था

जो बाद में लघु पुस्तिका के रूप में प्रकाशित हुआ।

गुण स्थान ५ :

आत्मा से परमात्मा बनने की प्रक्रिया का नाम गुण स्थान है। जैन धर्म में गुण स्थान की अपनी परिभाषा है। गुण्स्थान १४ होते हैं। यह दार्शनिक शब्द है। इस की व्याख्या करने से जैन दर्शन से गुजरना पड़ता है। आचार्य श्री विमल मुनि जी की पत्रिका का नाम भी गुण स्थान है। उन्हीं की पत्रिका में लगभग ५ किश्तों में यह लेख हिन्दी में प्रकाशित हुआ। यह लघु काया पुस्तिका के रूप में भी प्रकाशित हुआ।

श्रावक शिरोमणि सेठ नाथ राम जी जैन कुनरा ६ :

सेठ नाथ राम जी जैन कुनरा मेरे दादा थे। उनके धर्मिक जीवन का मेरे पर बहुत प्रभाव है। जिन शासन प्रभाविका, जैन ज्योति उपप्रवर्तनी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की प्रेरणा से हमारे परिवार ने एक अहिंसा अवार्ड की घोषणा की थी। जिसका नाम इंटरनैशनल महावीर जैन शाकाहार अवार्ड है। उनके व्यक्तित्व का हिन्दी भाषा में परिचय मेरे धर्म भ्राता श्री रविन्द्र जैन ने लिखा। यह पुस्तिका लघु काया है। मेरे लिए मेरे बाबा जी का जीवन आदर्श रहा है। उनके दिए संस्कार, हमारे परिवार के लिए आदर्श हैं। उनका जीवन स्वावलम्बी जीवन की उत्कृष्ट उदाहरण है। घर परिवार में रहते हुए उन्होंने धर्म का आदर्श स्थापित किया। वह अहिंसा व शाकाहार के महान पक्षधर थे। जीवन भर उन्होंने सारे गांव को इसका संदेश दिया।

सचित्र भगवान महावीर जीवन चारित्र ७ :

वर्ष २००१-२००२ भगवान महावीर के जन्म

कल्याणक का २६००वां वर्ष है। इसी वर्ष मैं आस्था की ओर बढ़ते कदम लिख रहा हूं। यह अहिंसा वर्ष है, जो समस्त विश्व में मनाया जा रहा है। सरकारी व निजी स्तर पर यह पूरे साल चलने वाला आयोजन है। भारत सरकार १०० करोड़ रूपए इन आयोजनों पर खर्च कर रही है। हमारे द्वारा २६वीं महावीर जन्म कल्याणक शताब्दी संयोजिका समिति पंजाब का गठन हो चुका है। अभी राज्य स्तरीय समिति बन चुकी है। हमारी समिति काफी समय से कार्यरत है। इस लिए विभिन्न आयोजन करने का निर्णय लिया है जिसे जन सहयोग से पूरा किया जाएगा।

इन्हीं आयोजनों से हमारी समिति ने उपप्रवर्तनी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की शिष्या सरलात्मा साध्वी श्री सुधा जी की प्रेरणा से हिन्दी भाषा में श्रमण भगवान महावीर का सचित्र परोपकारी जीवन लिखने का निर्णय किया गया। यह जीवन चारित्र विस्तृत शोध पर आधारित है। प्रभु महावीर के जीवन पर प्रकाश डालने वाले, सुन्दर रंगदार चित्र इस ग्रंथ का संपादन साध्वी डा० स्मृति जी महाराज एम.ए. ने किया है। इस ग्रंथ का प्रकाशन आगरा से हुआ है। विभिन्न सम्प्रदायों के आचार्यों, मुनियों, साध्वीयों, श्रावक व श्राविकाओं ने इस ग्रंथ की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। इस ग्रंथ का विशलेषण करना जरूरी है। यह ग्रंथ श्रद्धा व परम्परा को सामने रख कर लिखा गया है।

सर्व प्रथम इस ग्रंथ के लेखन में प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, साहित्य का प्रयोग किया गया है। दिगम्बर व श्वेताम्बर दोनों जैन परम्परां कां ध्यान रखा गया है।

इस ग्रंथ में प्रसिद्ध विद्वानों के आशीवाद हमें प्राप्त हुए, जिसका प्रकाशन किया गया है। शुरू में विस्तृत प्रस्तावना दी गई है। इस प्रस्तावना में भगवान महावीर का

उल्लेख जिन ग्रंथों में आया है उनका वर्णन है। श्वेताम्बर दिगम्बर परम्परा के मान्यता भेद दिए गए हैं। साथ में इतिहास में जैन धर्म का वर्णन दूसरे ग्रंथों में किस प्रकार किया है उसका वर्णन है। जैन धर्म व वेदिक धर्म के अंतर का उल्लेख किया गया है। दक्षिण भारत में हुए जैन पर अत्याचारों का इतिहासक उल्लेख किया गया है। प्रस्तावना जैन धर्म का स्वतन्त्र सत्ता की ओर इंगित करती है। इस ग्रंथ के ५ खण्ड हैं।

खण्ड - १

इस खण्ड में ५ प्रकरण हैं। प्रथम अध्याय का नाम है "श्रमण संस्कृति की रूप रेखा। इस खण्ड में श्रमण संस्कृति की प्राचीनता दिखाई गई है। वैदिक व श्रमण संस्कृति का अंतर वताया गया है। इस वात को सिद्ध करने के लिए वैदिक व वोद्ध ग्रंथों को आधार वनाया गया है।

दूसरे पाठ का नाम "जैन मान्यताओं के आरों का संक्षिप्त वर्णन' में जैन परम्परा अनुसार सृष्टि विकास की कहानी वताई गई है। उत्सर्पिणी व अवसर्पिणी कालों का वर्णन सरल भाषा में किया गया है, जो जैन धर्म की अपनी आधारभूत शास्त्रीय मान्यता है।

तीसरे पाठ में 'जैन तीर्थंकर परम्परा' का सरल भाषा में वर्णन किया गया है। इस में तीर्थंकर गोत्र के कारण २० वोल (कारण), १४ स्वप्न, ३४ अतिशय, तीर्थंकर का वल, उनकी भाषा के ३५ गुण, तीर्थंकर १८ दोषों का वर्णन है, जिन से तीर्थंकर भगवान मुक्त होते हैं। इस में यह भी स्पष्ट किया गया है कि जैन तीर्थंकर अवतार नहीं होते, जिस प्रकार वेदिक मान्यता में वर्णन मिलता है, ऐसी मान्यता का जैन धर्म में कोई स्थान नहीं है। हमारी यह कोशिश रही